डॉ. के. रतनम् : एक इतिहासकार

नीरज जोशी*

डॉ. के. रतनम् का जन्म 01 जनवरी 1965 को उत्तर प्रदेश के जिला ऐटा में एक समसम्मानित चित्रकार परिवार में हुआ था। डॉ. रतनम् के पिता शरण रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के एक विशिष्ट कला संस्थान में चित्रकला संस्थान में सेवानिवृत्त हुये थे, जिन्होंने कला इतिहास पर लगभग 8 दर्जन शोधार्थियों को पी–एच.डी. उपाधि हेतु मार्गदर्शन दिया। राष्ट्रीय स्तर पर समान एवं समीक्षा वादी चित्रकार है तथा माताजी डॉ. सुधा भी एक उच्च कोटि की चित्रकार एवं चित्रकला की उपाचार्य थी। डॉ. रतनम् की माताजी का स्वभाव बहुत अच्छा था।

डॉ. रतनम् की प्रारंभिक शिक्षा से लेकर स्नातक स्तर की शिक्षा बरेली में सम्पन्न हुई। एम.ए. इतिहास में प्रवीणता सूची में स्थान प्राप्त करने के बाद वह दर्शन निश्णात (एम. फिल) करने के बाद उच्च शिक्षा संस्थान में प्रवेश लिया और स्वर्ण पदक के साथ एम. फिल की डिग्री प्राप्त की और उसी संस्थान में तत्कालीन निदेशक एवं इतिहास के विभाग अध्यक्ष आचार्य के.के. शर्मा के मार्गदर्शन में सन् 1990 में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के वित्तीय पोषण में पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. रतनम् के शोध मार्गदर्शन आचार्य के.के. शर्मा भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा अमेरिकीय इतिहास के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इतिहासकार हैं। प्रो. के.के. शर्मा भारतीय इतिहास स्वसतावेज आयोग से लेकर राष्ट्रीय समिति के सदस्य रहे। एम. फिल उपाधि प्राप्त करने के बाद डॉ. रतनम् ने उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग में वरिष्ठ शोध अधिकारी के रूप में अपनी सेवायें प्रदान की। तत्पश्चात म.प्र. शासन के उच्च शिक्षा विभाग में इतिहास विभाग की चयन सूची में प्रथम स्थान प्राप्त कर प्राध्यापक के रूप में सेवायें प्रारंभ की। इसी मध्य छत्रपति साहू जी महाराजा कानपुर विश्वविद्यालय से गांधी फिलोस्फी एण्ड इट्स इनपेकट ऑन फ्रीडम ऑफ इंडिया विषय पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के वित्तीय पोषण में साहित्य वरधि (डी. लिट) की उपाधि प्राप्त की।

सन 2011 में डॉ. के. रतनम् म.प्र. लोक सेवा आयोग से इतिहास विषय में चयन सूची में प्रथम स्थान पर चयनित हुये।

सन् 1990 में डॉ. रतनम् का प्रथम दर्शन ग्रन्थ इथिकस ऑफ गांधीयन मोमेट प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद डॉ. रतनम् के अनेको शोध पत्र राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय रिसर्च जरनलों में प्रकाशित हुये तथा 50 शोध गोष्ठियों में सहभागिता तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

डॉ. रतनम् के मार्गदर्शन में लगभग 3 दर्जन शोधार्थी पी.एच.डी. की उपाधि तथा एक दर्जन से अधिक एम.फिल उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। डॉ. रतनम् ने अपने 25 वर्ष के अध्यापन काल में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद तथा विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग के अन्तर्गत अनेकों शोध योजनायें पूर्ण की।

* शोध छात्र (इतिहास) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।

डॉ. रतनम् जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के कार्य परिषद के अतिरिक्त अधिकारिक समितियों के सदस्य रहे तथा जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर द्वारा आयोजित प्रथम पी.एच.डी. प्रवेश परीक्षा के परिणामों पर आधारित समस्त विषयों की शोध उपाधि समिति के आयोजित करने के उद्देश्य से माननीय कुलपति द्वारा शोध समन्वयक नियुक्त किये गये तथा अल्प समय में उन्होंने 7 सितम्बर 2013 को विश्वविद्यालय में 2014 तक समस्त विषयों की सफलता पूर्वक शोध उपाधि समन्वयक रहकर कीर्तिमान स्थापित करते हुये शोध समन्वयक के दायित्व से मुक्त हुये।

डॉ. रतनम् एक निष्ठावान इतिहास शिक्षक एवं लगनशाली इतिहासकार है। डॉ. रतनम् की इतिहास के प्रति विशेष रूचि है। और वह छात्रों व शोधार्थी का पूर्ण मन से सहयोग करते हैं। और छात्र भी उनसे पूर्ण सन्तुष्ट रहते हैं।

डॉ. रतनम् का इतिहास दर्शन भारतीयों का इतिहास भारतीयों के लिये भारतीयों के द्वारा स्थापित पर आधारित है। डॉ. रतनम् का मानना है कि किसी देश का वास्तविक एवं तथ्यपरक इतिहास उस देश के लोगों के भी द्वारा लिखा जा सकता है। भारतीय विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाने वाला इतिहास भारतीयों द्वारा रचित नहीं है। जिसके कारण उसमें राजकता का अभाव है।

डॉ. रतनम् का शोध क्षेत्र राष्ट्रीय आन्दोलन एवं क्षेत्रीय इतिहास है। साथ ही वह इतिहास के विभिन्न शासकीय परियोजनाओं के साथ–साथ पर्यटन परियोजनाओं के आजीवन सदस्य हैं। डॉ. रतनम् अनेकों शिक्षक समितियों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय के रिसर्च जरनलों के मार्गदर्शन समितियों के भी सदस्य हैं।

डॉ. रतनम् का स्वभाव बहुत अच्छा है। वह हर समय प्रसन्नचित्त रहते हैं। जिसके कारण छात्र व शोधार्थी उनसे विशेष प्रेम रखते हैं और डॉ. रतनम् छात्र व शोधार्थियों की हर समस्या का समाधान करने के लिए हर पल तैयार रहते हैं। वह महान व्यक्तित्वशाली पुरूष है।

डॉ. के रतनम् ग्वालियर चम्बल संभाग की संस्कृति एवं इतिहास के एक इतिहास शिक्षक, इतिहासकार, इतिहास आलोचक एवं आदर्श शोधकर्ता हैं।

सन्दर्भ :

1. डॉ. जी.सी. सक्सेना (सम्पादक), एक्सप्रेशन–ऐसेस इन दि ऑनर ऑफ प्रो. एस.बी.एल. सक्सेना, अभिनन्दन ग्रन्थ, 2012, पृष्ठ–17।
2. मेरठ विश्वविद्यालय एम. फिल प्रवीणता सूची, 1987।
3. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, वित्तीय सहायता प्रदाय पत्र।
4. मध्य प्रदेश शासन सहायक प्राध्यापक चयन सूची उच्च शिक्षा विभाग भोपाल, दिनांक 08.11.1989।
5. मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग सीधी भर्ती प्राध्यापक चयन सूची दिनांक 05.01.2011।
6. डॉ. रतनम् से व्यक्तिगत साक्षात्कार पर आधारित।
7. वही।
8. वही।
9. वही।